UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Refereed Monthly Journal : Hindi Literature
Research Link - 167, Vol - XVI (12), February - 2018, Page No. 141-143
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

हिन्दी नवजागरण और द्विवेदी युग

प्रस्तुत शोधपत्र हिन्दी नवजागरण और द्विवेदी युग के अध्ययन से सम्बंधित है। आचार्य द्विवेदी ने सरस्वती के माध्यम से सांस्कृतिक नवजागरण में विशिष्ट योगदान दिया है। सरस्वती में पदार्थ विज्ञान, परमाणुवाद, भूगर्भ विद्या, ज्योतिर्विद्या आदि वैज्ञानिक विषयों पर निरंतर लेख प्रकाशित होते रहे और इस तरह आधुनिक विज्ञान की जानकारी देकर द्विवेदीजी सरस्वती के पाठकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रचार करते रहे, किन्तु उन्होंने सबसे ज्यादा लेख डार्विन और विकासवाद पर प्रकाशित किये। डार्विन की विचारधारा ने ही सारी दुनिया में धार्मिक अंधविश्वासों की जड़ों को हिला दिया था।

डॉ.शशी बाला

नवजागरण 1857 के स्वाधीनता संग्राम से आरम्भ हुआ, वह भारतेन्दु युग में व्यापक हुआ और द्विवेदी युग में साम्राज्य विरोधी, सामंत विरोधी प्रवृत्तियाँ और भाषायी प्रवृत्तियाँ और अधिक पुष्ट हुईं। इसका श्रेय महावीर प्रसाद द्विवेदी को है, जिन्होंने हिन्दी प्रदेश में नवीन सामाजिक चेतना का प्रसार किया। सरस्वती के माध्यम से उन्होंने लेखकों का ऐसा दल तैयार किया, जो नवीन चेतना का प्रसार कर सके। महावीरप्रसाद द्विवेदी ने वैज्ञानिक ढंग से हिन्दी समाज की अनेक समस्याओं का गहराई से विवेचन किया। राजनीति और अर्थशास्त्र के साथ उन्होंने आधुनिक विज्ञान का भी परिचय प्राप्त किया। भारत के प्राचीन दर्शन और विज्ञान का अध्ययन कर यह जानने का प्रयत्न किया कि भारतीय कहाँ पिछड़े हुए हैं।

भारतेन्दु युग में पुरानी व्यवस्था को बदलने की माँग जहाँ–तहाँ सुनाई देती है, द्विवेदी युग में वह माँग अधिक उग्र हो जाती है और इसके पीछे आचार्य द्विवेदी की कर्मठता व साधना रही है। आचार्य द्विवेदी का प्रभावशाली व्यक्तित्व और कृतित्व का सुखद परिणाम हिन्दी नवजागरण को पुष्टता प्रदान करता है। आचार्य द्विवेदी का जन्म 5 मई सन् 1864 में रायबरेली जिले के दौलतपुर गाँव में हुआ था। द्विवेदी जी ने अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। उर्दू, अंग्रेजी, फारसी, गुजराती, मराठी, बंगला, आदि भाषाओं में दक्षता प्राप्त की। 1896 में उन्होंने लॉर्ड बेकन के नाम से 36 निबंधों का अनुवाद किया। 1899 में ये निबन्ध 'बेकन–विचार रत्नावली' के नाम से प्रकाशित हुए। 1898–99 में उन्होंने श्री हर्ष एवं उनके महाकाव्य नैषधीय चरितम् पर अपनी पहली आलोचनात्मक पुस्तक 'नैषध–चरित चर्चा' लिखी, जो हिन्दी की पहली आलोचना पुस्तक मानी जाती है। 1903 में उन्होंने सरस्वती पत्रिका का कार्यभार संभाला। 'सरस्वती' हिन्दी नवजागरण की सशक्त पत्रिका के रूप में स्थापित हुई। अन्ततः 21 दिसम्बर 1938 को उनका देहावसान हो गया। प्रेमचंद ने लिखा है ''द्विवेदी जी का जीवन साहित्य और साधना तप का जीवन है। साहित्य ही उनका सर्वस्व है। उनकी चिंता और कल्पना और आकांक्षा और विनोद सबका स्रोत एक था और वह साहित्य है। पांडित्य प्रदर्शन भी उनकी मनोवृत्ति न थी। उनके हृदय में इसकी जड़ें उतनी ही गहरी थीं, जितनी हमारे जीवन में स्वार्थ और ममत्व की होती हैं। उनका स्वार्थ भी यही था और परमार्थ भी यही था।''[1] द्विवेदी जी भाषाविद् होने के साथ–साथ अनेक विषयों के विद्वान भी थे। उन्होंने साहित्य के अतिरिक्त विज्ञान, दर्शन, इतिहास, पुरातत्त्व, अर्थशास्त्र, जीव जन्तु, वनस्पति, समाजशास्त्र आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण लेखन किया है, भारत में अंग्रेजी राज्य की विश्लेषणात्मक आलोचना की है।

हिन्दी नवजागरण के माध्यम से वे राष्ट्रीय नवजागरण तक पहुँचते हैं और आधुनिक हिन्दी नवजागरण के प्रणेता बनते हैं। राजनीतिक दृष्टि से भारत अँग्रेजों का उपनिवेश था। महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से भारतीयों में राजनीतिक चेतना जाग्रत करने का अथक प्रयास किया। अनेक कवियों, लेखकों, साहित्यकारों को देशप्रेम पर कविताएँ, लेख, आलेख लिखने के लिए आमंत्रित किया। 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक के रूप में द्विवेदी जी ने कवियों, लेखकों में राजनीतिक चेतना की ऐसी अलख जगायी, जिसने समस्त भारतीय जनमानस में क्रांति का परिवेश तैयार किया। वे पहले राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन का खुलकर विरोध किया और इसका प्रमाण उनकी पुस्तक 'सम्पत्तिशास्त्र' है। 'भारत के सन्दर्भ में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की वैसी आलोचना उस समय तक अँग्रेजी में प्रकाशित नहीं हुई थी। हिन्दी में उसके टक्कर की दूसरी पुस्तक नहीं।'[2]

द्विवेदी जी ने अर्थशास्त्र से सम्बन्धित पुस्तक 'सम्पत्तिशास्त्र'

हिन्दी विभाग, आरपीएस (अंतर्राष्ट्रीय) शिक्षण संस्थान, गन्नौर, सोनीपत (हरियाणा)

लिखी, जिसमें उन्होंने भारत की आर्थिक स्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण किया है और अँग्रेजों की अर्थनीति के पीछे उनके झूठ को भी उजागर किया है। सितम्बर 1917 की 'सरस्वती' में 'भारतवर्ष का कर्ज' लेख में उन्होंने बताया कि, ''अँग्रेज हिन्दुस्तान का शासन इस तरह चलाते हैं कि साल दर साल उस पर कर्ज बढ़ता जाता है।''[3] उन्होंने अँग्रजों की व्यापार नीति की विस्तृत आलोचना की। द्विवेदी जी ने लिखा है–''प्रजा के हित चिन्तकों की राय है कि इस देश की ज़मीन प्रजा की है, न राजा की है, न ज़मींदारों की।''[4] भारत में अँग्रेजों ने यहाँ के व्यापार का नाश करके औद्योगीकरण की जड़ें ही काट दीं। द्विवेदी जी ने अँगेजों की व्यापार नीति की विस्तृत आलोचना की। 'गाँव की जिस बदहाली का चित्रण द्विवेदी जी ने सम्पत्तिशास्त्र में किया है, वह सब प्रेमचन्द के कथा साहित्य की पृष्ठभूमि है।'[5] सामाजिक दृष्टि से द्विवेदी जी ने भारतीय सामाजिक रूढ़ियों को नष्ट करने, पुरानी वर्ण व्यवस्था बदलने, जाति बिरादरी का भेदभाव मिटाकर व छुआछूत आदि कुरीतियों पर अपने लेखों के माध्यम से कुठाराघात किया। इस दृष्टि से वे नवजागरण के प्रणेता बनकर उभरे हैं। 'सरस्वती में इतिहास और समाजशास्त्र पर जो निबन्ध छपे वे आधुनिकता–बोध के विचार से मूल्यवान हैं। जुलाई 1915 की सरस्वती में ''सत्यशोधक का समाजशास्त्र'' शीर्षक निबन्ध छपा।'[6] आचार्य द्विवेदी ने सरस्वती में नवीन सामाजिक चिन्तन पर बल दिया। उन्हें विश्वास था कि लगातार वैज्ञानिक चिन्तन का प्रचार–प्रसार करने से लोगों के पुराने संस्कार उसी तरह बदलेंगे, जिस तरह चिकित्साशास्त्र के ज्ञान से लोग अपने रोगों और उनकी चिकित्सा के बारे में काम लेते हैं। आचार्य द्विवेदी सामाजिक नियमों की खोज पर बल देते हैं।

19वीं सदी और 20वीं सदी के प्रारम्भिक दशकों में समाज सुधर के अनेक आन्दोलन चलाये गए। इसी तरह हिन्दी नवजागरण ने भी समाज का ढांचा बदलना चाहा। पुराने रीति–रिवाजों, कुरीतियों का संरक्षक सामन्त वर्ग था और सामन्त वर्ग को स्थायित्व ब्रिटिश शासकों ने दिया। द्विवेदी जी ने अपनी पुस्तक 'सम्पत्तिशास्त्र' में सामन्तवादी शक्तियों का विरोध किया साथ ही सरस्वती के माध्यम से अनेक लेखकों का दल तैयार किया, जो सामन्तवाद का खुलकर विरोध कर सके। द्विवेदी जी ने भारतीय संस्कृति और विज्ञान का अध्ययन कर सांस्कृतिक महत्त्व को पहचाना। 'हिन्दी भाषी प्रदेश में एक ओर पुराने भारतीय वैज्ञानिक चिन्तन का पुनरुद्धार करने के लिए, दूसरी ओर पुराने अन्ध विश्वासों को निर्मूल करने के लिए उन्होंने महत्त्वपूर्ण कार्य किया।'[7] भारत की प्राचीन विवेक परम्परा को जीवित रखते हुए उसे नवीन परिस्थितियों में विकसित किया। द्विवेदी जी का दृष्टिकोण प्राचीन संस्कृति के प्रति नकारात्मक नहीं है। वह उसके पुनर्मूल्यांकन के पक्ष में हैं। वे जानते थे कि प्राचीन संस्कृति पर गर्व, राष्ट्रीय आत्मसम्मान की भावना अत्यंत मूल्यवान है। भारत के सांस्कृतिक इतिहास में आर्यभट्ट का विशेष स्थान है। उन्होंने गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। द्विवेदी जी ने कहा है– 'वास्तव में आर्यभट्ट को भारतवर्ष का न्यूटन कहना चाहिए।'[8]

आचार्य द्विवेदी ने सरस्वती के माध्यम से सांस्कृतिक नवजागरण में विशिष्ट योगदान दिया है। सरस्वती में पदार्थ विज्ञान, परमाणुवाद, भूगर्भ विद्या, ज्योतिर्विद्या आदि वैज्ञानिक विषयों पर निरन्तर लेख प्रकाशित होते रहे। और इस तरह आधुनिक विज्ञान की जानकारी देकर द्विवेदी जी सरस्वती के पाठकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रचार करते रहे, किन्तु उन्होंने सबसे ज्यादा लेख डार्विन और विकासवाद पर छापे। डार्विन की विचारधरा ने ही सारी दुनिया में धर्मिक अंधविश्वासों की जड़ें हिला दी थीं। '19वी सदी के अन्त में हिन्दी प्रदेश में जो नवजागरण आरम्भ हुआ, वह अन्य प्रदेशों के नवजागरण से कई बातों में भिन्न है। वह रहस्यवाद और तर्कविरोधि पुनरुत्थानवाद का समर्थक नहीं है। वह प्राचीन संस्कृति पर गर्व करना सिखाता है, किन्तु उसके विवेकपूर्ण पुनर्मूल्यांकन पर जोर देता है।'[9] महावीर प्रसाद द्विवेदी वैज्ञानिक शिक्षा के साथ प्राचीन भारतीय संस्कृति का सम्बंध स्थापित करते हैं। यह नवजागरण अतीत के प्रति भावुकता, पुनरुत्थानवाद और रहस्यवाद की दृष्टि नहीं अपनाता। हिन्दी नवजागरण मूलतः बुधिवादी और रहस्यवाद विरोधी हैं। आचार्य द्विवेदी ने हिन्दी भाषा के विकास का बीड़ा उठाया था। उन्होंने हिन्दी के शब्द भंडार में पर्याप्त अभिवृद्धि की। आवश्यकतानुसार एक ओर तो सरल, तत्सम संस्कृत शब्दों का प्रयोग प्रचलित किया, दूसरी ओर बंगला, मराठी, उर्दू और अँग्रेजी के सरल शब्दों को स्थान दिया। उन्होंने अपनी कर्मठता, विद्वता से खड़ीबोली हिन्दी की सामर्थ्य और साहित्यिक समृद्धि को प्रगति पथ पर अग्रसरित किया। सरस्वती पत्रिका में उन्होंने अपनी कविता 'हे कविते' में खड़ीबोली का तत्सम शब्द रूप पाठकों के समक्ष रखा–''सुरम्य रूप! रस राशि रंजिते विचित्र वर्णाभरणे! कहाँ गई? अलौकिकानंद विधयिनी महा कवींद्र कांते! कविते! अहो कहाँ?''[10] द्विवेदी जी ने अपने लेख 'कवि कर्तव्य' में लिखा है–''गद्य–पद्य की भाषा पृथक–पृथक नहीं होनी चाहिए। सभ्य समाज की भाषा हो, उसी भाषा में गद्य पद्यात्मक साहित्य चाहिए। बोलना एक भाषा में और कविता में प्रयोग करना दूसरी भाषा प्राकृतिक नियमों के विरोधी हैं, जो लोग हिन्दी बोलते हैं और हिन्दी ही के गद्य साहित्य की सुश्रुषा करते हैं, उसके पद्य में ब्रजभाषा का आधिपत्य बहुत दिन नहीं रह सकता है।'[11]

द्विवेदी जी ने भाषा व्याकरण की त्रुटियों की ओर हिन्दी लेखकों और पाठकों का ध्यान आकर्षित करने हेतु सरस्वती में भाषा और व्याकरण नामक स्वलिखित लेख प्रकाशित किया और उसमें लिखा है कि 'जिस भाषा में बड़े–बड़े इतिहास, काव्य, नाटक, दर्शन विज्ञान और कला–कौशल से सम्बंध रखने वाले महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे जाते हैं। उसका व्याकरण बनाना चाहिए। लिखित भाषा में ही ग्रंथकार अपने कीर्तिकलाप को रखकर अपना नश्वर शरीर छोड़ जाते हैं। व्याकरण ही उस कीर्ति का प्रधान रक्षक है।'[12] निराला ने लिखा है– 'वह आधुनिक हिन्दी के निर्माता हैं, विधाता है, सर्वस्व हैं। वह राष्ट्रभाषा हिन्दी के मूर्तमान स्वरूप हैं। उन्हें लोग आचार्य कहते हैं– वह सचमुच आचार्य हैं। आधुनिक हिंदी की उन्नति और विकास का श्रेय उन्हीं आचार्य को है।'[13] द्विवेदी जी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में व हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में केन्द्रित कर गहराई से विश्लेषण किया। उन्होंने हिन्दी भाषा और हिन्दी गद्य में ज्ञान साहित्य के विविध द्वार खोले। ज्ञान में ही नहीं वरन् कलात्मक साहित्य को भी उन्नत किया। द्विवेदी जी ने नये–नये लेखकों को नये–नये विषयों पर लिखने के लिए प्रेरित किया। एक नयी सामाजिक चेतना के विकास और परिष्कार का कार्य किया। कवियों

की उर्मिला विषयक उदासीनता' आदि लेख लिखकर गुप्त जी को साकेत जैसा महाकाव्य रचना की प्रेरणा दी।

निष्कर्ष :

हिन्दी नवजागरण में महावीरप्रसाद द्विवेदी का वैशिष्ट्य मात्रा हिन्दी प्रदेश के लिए नहीं, वरन् समस्त प्रदेशों में अपनी सशक्त भूमिका अदा करता है। द्विवेदी जी के महत्त्व को रेखांकित करते हुए प्रेमचंद ने कहा है– ''आज हम जो कुछ भी हैं, उन्हीं के बनाये हुए हैं। यदि पं0 महावीरप्रसाद द्विवेदी न होते तो अभी बेचारी हिन्दी कोसों पीछे होती–समुन्नति की इस सीमा तक आने का उसे अवसर ही नहीं मिलता। उन्होंने हमारे लिए पथ भी बनाया और पथ प्रदर्शक का भी काम किया।''(14) हिन्दी नवजागरण में योगदान द्विवेदी जी ने दिया है और जो हिन्दी की सेवा की है इतनी किसी ने नहीं की है। श्री रमाशंकर अवस्थी ने लिखा है– ''हिन्दी के इतिहास इस व्यक्ति विशेष से इतनी घनिष्ठता के साथ सम्ब है कि अकेले द्विवेदी जी के साथ वर्तमान हिन्दी का विकास उसी तरह लिपटा हुआ है, जिस तरह किसी बड़े वृक्ष के साथ हिन्दी की लताएं लिपटी हुई होती हैं।''(15) इस तरह द्विवेदी जी का महत्त्व आधुनिक हिन्दी साहित्य का मार्ग प्रशस्त करने में रहा है। समग्रतः हिन्दी नवजागरण में महावीरप्रसाद द्विवेदी का वैशिष्ट्य उनकी सशक्त भूमिका अदा करता है।

संदर्भ

(1) *प्रेमचंद : हंस, मई, 1933.*

(2) *शर्मा, रामविलास : महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ 389.*

(3) *वही, पृ0 29.*

(4) *वही, पृ0 30.*

(5) *वही, पृ0 383.*

(6) *वही, पृ0 163.*

(7) *वही, पृ0 119.*

(8) *वही, पृ0 121.*

(9) *वही, पृ0 143.*

(10) *सरस्वती, 1901, पृ0 198.*

(11) *सरस्वती, 1901, पृ0 232.*

(12) *सरस्वती, 1905, पृ0 426, द्वितीय अनुच्छेद।*

(13) *शर्मा, रामविलास : महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, पृ0 392.*

(14) *प्रेमचंद : हंस, द्विवेदी अभिनंदनांक, अप्रैल 1933.*

(15) *यायावर, भारत : महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्त्व, किताबघर प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2003, पृ0 439.*

❁❁

UGC -

APPROVED - JOURNAL

UGC Journal Details

Name of the Journal :	Research Link
ISSN Number :	09731628
e-ISSN Number :	
Source:	UNIV
Subject:	Accounting;Anthropology;Business and International Management;Economics, Econometrics and Finance(all);Education;Environmental Science(all);Finance;Geography, Planning and Development;Law;Political Science a;Social Sciences(all)
Publisher:	Research Link
Country of Publication:	India
Broad Subject Category:	Arts & Humanities;Multidisciplinary;Social Science

Print

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

(1) शोध-पत्र **1500-1700 शब्दों से अधिक नहीं** होना चाहिए।

(2) हिन्दी एवं मराठी माध्यम के शोधपत्रों को कृतिदेव 10 (Kruti Dev 010) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजें।

(3) पंजाबी माध्यम के शोधपत्रों को अनमोल लिपि (AnmolLipi) या **अमृत बोली** (Amritboli) या **जॉय** (Joy) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजें।

(4) अंग्रेजी माध्यम के शोधपत्र टाईम्स न्यू रोमन (Times New Roman), एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' या 'माइक्रोसाफ्ट वर्ड' में भेजे जा सकते हैं।

(4) शोधपत्र की विधि - **(1)** शीर्षक **(2)** एबस्ट्रेक्ट **(3)** की-वर्ड्स **(5)** प्रस्तावना/प्रवेश **(5)** उद्देश्य **(6)** शोध परिकल्पना **(7)** शोध प्रविधि एवं क्षेत्र **(8)** सांख्यिकीय तकनीक **(9)** विवेचन या विश्लेषण **(10)** सुझाव **(11)** निष्कर्ष एवं **(12)** संदर्भ ग्रंथ सूची।

(6) संदर्भ ग्रंथ सूची इस प्रकार दें -

For Books :

(1) Name of Writer, "Name of Book", Publication, Place of Publication, Year of Publication, Page Number/numbers.

For Journals :

(2) Name of Writer, "Title of Article", Name of Journal, Volume ....., Issue ....., Page Numbers.

Web references :

http://utc.iath.virginia.edu/interpret/exhibits/hill/hill.html

(7) गुजराती माध्यम के शोधपत्र **हरेकृष्णा (Harekrishna), टेराफोंट वरुण (Terafont Varun), टेराफोंट आकाश (Terafont Aaksah)** में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजे जा सकते हैं।

(8) शोधपत्र की साफ्टकॉपी रिसर्च लिंक के ई-मेल आईडी researchlink@yahoo.co.in पर भेजने के बाद हॉर्डकॉपी, शोधपत्र के मौलिक होने के घोषणा पत्र के साथ हस्ताक्षर कर 'रिसर्च लिंक' के कार्यालय को प्रेषित करें।

❁❁

UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Refereed Monthly Journal : Hindi Literature
Research Link - 167, Vol - XVI (12), February - 2018, Page No. 144-145
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

हिन्दी के जीवनीपरक उपन्यासकारों के उपन्यासों का तात्विक अध्ययन

प्रस्तुत शोधपत्र में हिन्दी के जीवनीपरक उपन्यासकारों के उपन्यासों का तात्विक अध्ययन किया गया है। हिन्दी साहित्यकारों की जीवनी पर आधारित उपन्यासों की रचना हेतु जिस विषयवस्तु को ग्रहण किया गया है, वह सूरदास, तुलसीदास, कबीरदास, विद्यापति गोरखनाथ, आचार्य केशव, बिहारीलाल, कालिदास, सौमिल्लक, हजारीप्रसाद द्विवेदी, भारतेंदु हरिशचंद्र, प्रेमचंद, शरदूचंद्र आदि की जीवनगाथा तथा उनके युग की परिस्थितियों से जुड़ी हुई है, जो धार्मिक, सामाजिक, नैतिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, आर्थिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक होने के साथ-साथ मूलतः साहित्यिक है। विषय से अभिप्राय लेखक के केवल खाने-पीने, सोने एवं उठने से नहीं है, बल्कि उनके जीवन में अनुभव की गई घटना या अनुभूति का विवरण है। जीवनी साहित्य के सर्जक को जीवन की ऊँचाइयों तक जाना पड़ता है और गहराइयों तक डूबना भी पड़ता है।

डॉ.भीमसिंग राठोड

प्रस्तावना :

जब कोई लेखक कुछ वास्तविक घटनाओं के आधार पर श्रद्धेय व्यक्ति का जीवन चरित लिखता है, तो वह जीवनचरित साहित्य में जीवनी कहलाता है। इन्हीं जीवनी के तत्वों के आधार पर जब कोई लेखक किसी श्रद्धेय व्यक्ति की जीवन गाथा रोचक ढंग से, कल्पना की सहायता व उपन्यास के तत्त्वों के समावेश द्वारा करता है, तो वह जीवनी पर आधारित उपन्यास कहलाता है। साहित्यकारों के जीवनी पर आधारित उपन्यास हिन्दी साहित्य में आज एक विध विशेष बन चुके हैं।

आलोच्य विषय के तत्कालीन अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम विषयवस्तु या वर्ण्य विषय पर विचार किया जा सकता है। यह जीवनी साहित्य का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। जीवनी प्रधान उपन्यासों में लेखक नायक का विश्लेषण करते हुए विषय वस्तु को आगे बढ़ाते हैं।

विषय–वस्तु कथानक विश्लेषण :

वर्ण्य विषय में नायक के चरित्र की वास्तविक घटनाओं का कलात्मक संश्लेषण, विवेचन एवं विश्लेषण आवश्यक होता है। हिन्दी के साहित्यकारों की जीवनी पर आधारित उपन्यासों की विषयवस्तु भी ठीक इसी प्रकार का कलात्मक प्रस्तुतीकरण है। उपन्यासकारों ने इतना अवश्य ध्यान रखा है कि नायक ऐसे व्यक्ति हो जिनकी जीवनी पर अधारित उपन्यास द्वारा पाठक प्रेरणा अथवा विशिष्ट ज्ञान ग्रहण कर सके। इन उपन्यासों के माध्यम से लेखकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सत्य स्वप्न से भी रोमांचकारी हो सकता है।

विषय वस्तु को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए उसमें कुछ गुणों का होना आवश्यक है। जीवनी प्रधान उपन्यासों की विषयवस्तु का सर्वप्रथम गुण वास्तविकता एवं सत्य है। विषय के रूप एवं सत्य वर्णन से ही रोचकता एवं प्रसादात्मकता का समावेश होता है। व्यक्ति विशेष का चरित्र केवल गुणों पर आधारित नहीं होता है, मनुष्य दोष का भी भागीदार है। अतः इन सभी के वर्णन से विषय में रोचकता आ सकती है।

तीसरा महत्वपूर्ण गुण जो आलोच्य विषय को उत्कृष्ट बनाता है, वह वैज्ञानिकता का होना है। विज्ञान और विवेक की शत–प्रतिशत आवश्यकता जीवनी प्रधान उपन्यासों में अनिवार्य है। इन सबके साथ विषय–वस्तु में संक्षिप्त एवं सुसंगठन अत्यंत आवश्यक है। यहाँ पर यह भी स्पष्ट करना होगा कि जीवनीकार जितना चाहे उतना कल्पनाशील बन सकता है, जितना वह कल्पनाशील होगा, उतना ही सामग्री को अच्छे ढंग से एकत्रित कर सकता है, पर उसकी सामग्री कल्पित नहीं होनी चाहिए। अतः जीवनीकार को भूतकाल का अवश्य अध्ययन करना चाहिए, पर उस भूतकाल को वर्तमान की दृष्टि में रखते हुए अध्ययन आवश्यक है। जीवनी पर आधारित उपन्यासकार भी अपनी कृतियों में यह प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। वे तत्वों का अनुमान मात्र लगाते है, वर्णन नहीं देते। बीती घटनाओं के प्रति सम्मान ही उनका ध्येय है।

हिन्दी साहित्यकारों की जीवनी पर अधारित उपन्यासों की रचना हेतु जिस विषयवस्तु को ग्रहण किया गया है, वह सूरदास, तुलसीदास, कबीरदास, विद्यापति गोरखनाथ, आचार्य केशव, बिहारीलाल कालिदास, सौमिल्लक, हजारीप्रसाद द्विवेदी, भारतेंदु हरिशचंद्र, प्रेमचंद, शरदूचंद्र आदि की जीवनगाथा तथा उनके युग की परिस्थितियों से जुड़ी हुई है, जो धार्मिक, सामाजिक, नैतिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, आर्थिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक होने के साथ–साथ मूलतः साहित्यिक है।

हिन्दी सह-अध्यापक, प्लॉट नंबर 56, सर्वे नं.40, कुसनूर रोड़, कलबुरगी (कर्नाटक)

विषय से अभिप्राय लेखक के केवल खाने–पीने, सोने एवं उठने से नहीं है, बल्कि उनके जीवन में अनुभव की गई घटना या अनुभूति का विवरण है। जीवनी साहित्य के सर्जक को जीवन की ऊँचाइयों तक जाना पड़ता है ओर गहराइयों तक डूबना भी पडता है।

जीवन को समझना तभी संभव है, जब उसके साथ सामाजिक संचरण किया जाए, तभी जीवन आर्थिक और राजनैतिक प्रचेतनाओं तथा प्रयोजनों की झाँकी प्रस्तुत कर सकता है। लेखक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह ऐसा सांस्कृतिक मानव प्रस्तुत कर सके, जो मान समाज के लिए शिक्षाप्रद, नवीन, अदुभुत, रुचिकर तथा लाभकर हो। ये समस्त बातें साहित्य में युग चेतना के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। 'चेतना' अनुभूतियों की जननी है। वह साहित्य की आत्मा है, तो युग चेतना उसके आलोकमय नेत्र है, जिनसे वह सारे संसार का सौंदर्य आत्मसात करती है। साहित्य, चेतना के बिना निष्प्राण होता है तथा युग चेतना के अभाव में अंधा, जो न वर्तमान के बारे में कुछ कर सकता है और न स्वर्णिम उषाकालीन भविष्याशा के पथ को देख सकता है।' अतः साहित्य का केंद्र बिंदु मानव जीवन है। साहित्य जीवन की प्रतिकृति है। उसका केन्द्र बिंदु मानव का आनंदमय एवं विषयमुक्त जीवन है। आलोच्य उपन्यासों के कथानक की विषयवस्तु का मूल्यांकन वहाँ पर प्रत्येक उपन्यास के संदर्भ में लेना अधिक आवश्यक होगा।

प्रत्येक उपन्यास के संदर्भ में उसकी विषयवस्तु का निरीक्षण व विश्लेषण आलोच्य कृतियों के अध्ययन को अधिक स्पष्टता प्रदान कर सकता है।

जीवनी पर आधारित आलोच्य उपन्यासों के कथानक का मूल्यांकन :

आलोच्य उपन्यासों के नायक के प्रसिद्ध कवि, लेखक व साहित्यकार है। साहित्यकार का जीवन सार्वभौमिक होता है। उपन्यासकारों ने साहित्यकारों की जीवनी को एक उपन्यास के रूप में ढाला है, जो घटनाओं का मात्र अंकन नहीं वरन चित्रण है। मनुष्य के अंतर और बाह्य स्वरूप का कलात्मक निरुपण है। प्रत्येक उपन्यास के संदर्भ में विषयवस्तु का मूल्यांकन मूलतः पाँच आधार पर किया गया है –

(1) इतिहास (2) प्रामाणिकता, (3) कल्पना में पूर्णता
(4) रोचकता एवं (5) विशिष्ठता।

जीवनी प्रधान उपन्यास :

भारती का सपूत :

'भारती का सपूत' हिन्दी के कर्णधार कवि गद्यकार बाबु भारतेंदु हरिशचंद्रजी की जीवनी पर आधारित उपन्यास है। डॉ. रांगेय राघव ने इतिहास प्रसिद्ध साहित्यकार के जीवन पर अपने उपन्यास का वर्ण्य विषय बनाया है। भारती का सपूत से पूर्व शिवनंदन सहाय और ब्रजरत्नदास ने भी भारतेंदु का जीवन चरित्र लिखा।

इतिहास सम्मतता :

भारत के राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास में सन 1857 ई. का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम महत्त्वपूर्ण व क्रांतिकारी घटना थी और आज भी है। धीरे–धीरे ये चेतना हमारे उस समय के राष्ट्रीय–सांस्कृतिक जीवन का केंद्र बन गई, जिसका सम्यक विकास हमें स्वामी दयानंद सरस्वती में मिलता है। इस सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना के कई रूप थे – भक्तिकालीन, मानवतावादी परंपरा तथा प्राचीन सांस्कृतिक गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा, कुरीतियों और अंधविश्वासों का विरोध तथा अनेक सामाजिक आंदोलन। इतिहास सम्मत इस परिवेश में उपन्यासकार ने भारतेंदु के जीवन की कथा को आगे बढ़ाया है। व्यक्ति भारतेंदु से सम्बंधित उपन्यास में वर्णित कथावस्तु इतिहास सम्मत है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इतिहास की आधारशीलता पर उनका जीवन चित्रित किया गया है।

प्रमाणिकता :

भारतेंदु जी का प्रमाणिक जन्म काल सन 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से केवल 7 वर्ष भाद्रपद शुक्ल 5 संवत् 1907 विक्रमापद (02 सितम्बर 1850) माना जाता है। विमाता से स्नेह वंचित भारतेंदु हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी व अंग्रेजी के विद्वान थे। वैभव विलास में धन तथा जीवन के अंतःकाल में आर्थिक कष्ट आदि प्रामाणिक बातों की सहायता से ही उपन्यास्कार ने भारतेंदु का जीवन प्रस्तुत किया है। पारिवारिक कलह व पत्नी के अतिरिक्त दो और स्त्रियों से उनका संपर्क, ३४ वर्ष की अल्प आयु में मृत्यु प्रामाणिक तथ्य है। उपन्यासकार ने नायक के व्यक्तित्व में तीन गुणों को महत्व दिया है – साहित्य, राष्ट्र और समाज।

डॉ. रांगेय राघव ने भारतेंदु की जीवन चरित्र में राष्ट्रीय व सामाजिक परिस्थितियों को उस समय की साहित्यिक परिस्थितियों से अधिक महत्व दिया, जबकि उनके सहयोगी साहित्यकारों के विषय में बहुत कम चर्चा हुई है, जो नहीं के बराबर है। 'साहित्यकार डॉ. जगमोहन सिंह की चर्चा आचार्य रामचंद्र शुक्ल एवं राजनाथ शर्मा ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में की है। आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि भारतेंदु हरिशचंद्र के सहयोगियों में डॉ. जगमोहन सिंह एक प्रखर साहित्यकार थे।

❁❁

UGC -

APPROVED - JOURNAL

UGC Journal Details

Name of the Journal :	Research Link
ISSN Number :	09731628
e-ISSN Number :	
Source:	UNIV
Subject:	Accounting;Anthropology;Business and International Management;Economics, Econometrics and Finance(all);Education;Environmental Science(all);Finance;Geography, Planning and Development;Law;Political Science a;Social Sciences(all)
Publisher:	Research Link
Country of Publication:	India
Broad Subject Category:	Arts & Humanities;Multidisciplinary;Social Science

UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Refereed Monthly Journal : Hindi Literature
Research Link - 167, Vol - XVI (12), February - 2018, Page No. 146-148
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

समकालीन महिला रचनाकारों के कथा-साहित्य में आधुनिकता बोध

प्रस्तुत शोधपत्र में समकालीन महिला रचनाकारों के कथा-साहित्य में आधुनिकता बोध का अध्ययन किया गया है। समकालीन कहानी में मूल्यों के प्रति यह आधुनिक बोध पूरी तरह से रुपायित हो चुका है। प्रेम, विवाह, परिवार में माँ-बाप, भाई-बहन, पिता-पुत्री, मित्र आदि के भी जितने सहृदय सम्बंध हो सकते हैं, उन सबके प्रति हमारी सोच और चिंतन प्रक्रिया में बड़ा भारी अंतर दिखाई देता है। साथ ही आज कहानी में काम और प्रेम सम्बंधों की खुली से खुली चर्चा भी किसी भी प्रकार के वर्जना भाव को जन्म नहीं देती, वरन् यह आधुनिकता के दौर में कहानी क्षेत्र में स्थापित होने की साहसिकता (बोल्डनेस) प्रदर्शन माना जाने लगा है। महिला कथा लेखिकाओं ने भी इस प्रवृत्ति को बखूबी आगे बढ़ाकर आधुनिक नये नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का काम जारी रखा है।

डॉ.अंजना यादव

समकालीन हिन्दी कहानी में आधुनिकता का स्वर विशेष रूप से मुखरित हुआ है, इसके अनेक सम्बंध प्रकट हुए हैं – मानव सम्बंध, समाज सम्बंध, परिवार सम्बंध, औद्योगिक सभ्यता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण जीवन स्तर आदि। आधुनिकता का यह रूप पाश्चात्य देशों में पहले विकसित हुआ था, क्योंकि यूरोपीय देशों में औद्योगिक क्रांति बहुत पहले हो गई थी। आने वाले वर्षों में जन–जीवन पर प्रभाव पड़ा था, परिणामस्वरूप उन देशों में मानवीय सम्बंधों में आमूल परिवर्तन आ गए थे और उनमें जीवन के प्रति तार्किक दृष्टिकोण उत्पन्न हो गया। वहाँ समाज की अपेक्षा व्यक्ति प्रमुख हो उठा। प्रभुत्व पाकर व्यक्ति उन मूल्यों को त्यागने लगा, जो उसे अपने समूह या समाज के प्रति प्रतिबद्ध रहते थे। अब वह सिर्फ अपने बारे में सोचता दूसरी ओर पूर्वी यूरोपीय देशों में समाजवादी शासन की स्थापना हुई। वहाँ व्यक्ति के प्रभुत्व के स्थान पर समाज को प्रमुखता प्राप्त हुई, और व्यक्ति तथा समाज के मध्य नए सम्बंधों का सूत्रपात हुआ।

भारत में आधुनिकता के इस रूप को बहुत बाद में समझा गया। इस विलंब के कुछ ऐतिहासिक कारण थे, जिनमें भारत की सदियों की गुलामी, पुराने मूल्य, तकनीकी और यांत्रिकता का अभाव, भारत की परम्परावादिता और नवीन मूल्यों के प्रति अविश्वास भाव आदि प्रमुख है। उन्हीं तथ्यों को भारतीय मानस अपनी समाज व्यवस्था में स्वीकार नहीं कर सका।

चूंकि भारतीय संदर्भ में आधुनिकता को अनेक पक्षों से देखा गया है। भारतीय बुध्दिजीवियों ने अपनी आशंकाओं, सीमाओं, परम्पराओं, आवश्यकताओं, आकांक्षाओं ग्रहणशीलता आदि के अनुरूप आधुनिकता और आधुनिकता बोध को पहचानने का प्रयत्न किया है।

आधुनिकता बोध साहित्य के संदर्भ में :

(1) समकालीन नई कहानी में आधुनिकता की प्रवृत्ति को तलाश करने के पूर्व आधुनिकता का स्वरूप विवेचन आवश्यक है। आधुनिकता के संबंध में भिन्न–भिन्न व्यक्तियों की अपनी–अपनी धारणाएँ हैं। प्रथम धारणा में आधुनिकता का एक अर्थ समय–सापेक्ष है। इसका तात्पर्य यह है कि आधुनिकता को देश विशेष की भौगोलिक सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। हमारे देश में राजनीति दृष्टि से आधुनिक युग का प्रारंभ 18वी शताब्दी के उत्तरार्ध से माना जाता है। जब राजा राममोहन राय ने सामाजिक पुनर्जागरण की शुरूआत की थी। इसी प्रकार हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का प्रारंभ भारतेन्दु युग से समझा जाता है।

आधुनिकता का दूसरा अर्थ वर्तमान से भी लिया जाता है, अर्थात् वर्तमान युग में हम जिस प्रकार रहते हैं और जैसा जीवन जीते हैं, वही आधुनिक है, ऐसी स्थिति में प्रश्न उठता है कि, क्या संपूर्ण वर्तमान युग ही आधुनिक है या इस युग में भी जो सामाजिक है, वह आधुनिक है।

अतः अब तक आधुनिकता के आधार निश्चित नहीं किए जा सकते, जब तक इस धारणा को सही परिप्रेक्ष्य में नहीं देखा जाएगा। आधुनिकता का अर्थ समय–सापेक्ष करने से भी समस्या हल नहीं होती है, क्योंकि हर युग अपने में आधुनिक होता है। भारतेन्दु काल आज हमें पुराना लगता है, लेकिन अपने समय में वह भी आधुनिक था।

आधुनिकता का तीसरा अर्थ दृष्टिकोण से सम्बद्ध है। अर्थात् दृष्टिकोण के कारण आधुनिकता का स्वरूप बदलता रहता है, चूंकि दृष्टिकोण गत्यात्मक है और निरन्तर रूप से परिवर्तित होता है। अतः आधुनिकता भी निरन्तर रूप से बदलती रहती है। आधुनिक काल में रहते हुए भी व्यक्ति अपने दृष्टिकोण के कारण पुराना हो सकता है और व्यतीत युग के रचनाकार के विचार भी हमें आधुनिक प्रतीत हो सकते हैं। निष्कर्ष रूप में आधुनिकता देशकाल और समय तक सीमित नहीं, अपितु वह गत्यात्मक है।

अतिथि विद्वान (हिन्दी विभाग), शासकीय नर्मदा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, होशंगाबाद (मध्यप्रदेश)

उपर्युक्त तथ्य से यह भी सिद्ध हो जाता है कि आधुनिकता कोई मूल्य नहीं है, जिसके आधार पर जीवन चेतना का मूल्यांकन किया जाए। लेकिन उन युगीन परिस्थितियों को प्रेरणादायक अवश्य माना जा सकता है, आज हमारे वर्तमान युग में विज्ञान की उपलब्धियों अणु शक्ति, यांत्रिकी आदि का मानव मूल्यों पर पूरा दबाव पड़ा है तथा विज्ञान ने व्यक्ति को नये ढंग से पहचानने के लिए विवश किया है।[1]

(2) आधुनिकता के साथ में परम्परा का प्रश्न भी उठाया जाता है। कुछ व्यक्ति आधुनिकता को परम्परा का विरोधी स्वीकार करते हैं, उनके अर्थों में परम्परा जड़ एवं स्थितिशील है, लेकिन यह परम्परा का भ्रामक बोध है। परम्परा वस्तुतः गत्यात्मक और युग–युगान्तर से चली आती हुई मानव संस्कृति की ठोस प्रक्रिया है, जो मानव जीवन के विविध अनुभवों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करती है, इसलिए गतिशीलता, आत्मसजगता एवं सक्रियता परम्परा के आंतरिक गुण हैं। परम्परा जब अपने इस स्वरूप से विचलित हो जाती है, तो वह रूढ़ि बन जाती है।

गति या प्रवाह परम्परा का आवश्यक गुण है, जहाँ गति नहीं है, प्रवाह नहीं है, वहीं सड़क है, इसी को रूढ़ि कहते हैं।[2]

(3) आधुनिकता को एक व्यापक सामाजिक सांस्कृतिक चेतना के रूप में परिकल्पित और विकसित करने में पाश्चात्य दार्शनिकों और विचारकों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। विकासवादी सिद्धांत का प्रतिपादन करने वाले चार्ल्स डारविन (1809–1882) इसे समाज का विकासवादी सिद्धांत मानते हैं। हर्बर्ट स्पेंसर (1820–1903) आधुनिकता को प्रविधि (मूल्यों) के विकास से जोड़ते हैं, इस प्रकार कार्ल मार्क्स सहित सभी दार्शनिक, विचारकों ने आधुनिकता को एक सुदृढ़ दार्शनिक आधार बनाया है। और विद्रोह और क्रांति जैसी धारणाओं पर नये सिरे से विचार किया आधुनिक चेतना और चिंतन पद्धति का प्रारंभ इन्ही से हुआ। आस्था और विश्वास के स्थान पर मानवीय विवेक और विचार को केन्द्रीय महत्व प्राप्त हुआ है। विचारों की दुनिया में निश्चय ही इस धारणा ने एक नयी क्रांति की शुरूआत की थी।

आधुनिकता का सही स्वरूप विद्रोहात्मक है, आधुनिक युग और आधुनिकता का प्रारंभ मनुष्य द्वारा अपनी स्थिति के प्रति असंतोष और विद्रोह करने तथा समाज की सड़ी–गली मान्यताओं और व्यवस्थाओं को चुनौती देने या उन्हे अमान्य ठहराने के संकल्प के साथ जुड़ा हुआ है। आधुनिक में शक्ति और सत्ता के प्रतीकों में युगान्तकारी परिवर्तन हुए हैं और नवीन सत्ताओं और व्यवस्था तन्त्रों के विरूद्ध एक नयी जागरूकता, संघर्ष चेतना और विद्रोही मानसिकता पनपी है, जो आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का ही हिस्सा है आधुनिकता के दबाव से कुछ खास आचरणगत मनोदशायें और रवैये (बेरोजगारी, आत्महत्या, आवारागर्दी, व्यर्थता, बोध, शारीरिक और मानसिक रूग्णतायें आदि) पैदा हुए हैं। उनसे निपटने के लिए कई तौर तरीके अपनाये गए हैं, अस्वीकृति, आक्रोश और संघर्ष इन्हीं में से उभरकर सामने आए हैं, जो आधुनिकता के तत्व माने जाते हैं।[3]

(4) हिन्दी कहानी में आधुनिकता की पृष्ठभूमि में आधुनिक पाश्चात्य दर्शनों का प्रभाव है, इसी के अनुरूप आधुनिक हिन्दी कहानी आधुनिक संवेदना के लिए कही भारतीय परिवेश के लिए कही भारतीय परिवेश में कहीं जान पड़ती है, तो कहीं समकालीन परिवेश से स्वयं को जोड़ती है।

समकालीन कहानीकारों ने महानगर में एक बड़े पैमाने पर हो रहे परिवर्तनों और यंत्र सभ्यता के दबावों को अनुभव किया है। जिसके फलस्वरूप स्वार्थपूर्ण महानगरीय जीवन में मानवीय रिश्ते खोखले, दिखावों से भरे और बेमानी होकर रह गये हैं, समाज में आज निरन्तर पुराने या स्वीकृत मूल्यों पर प्रश्नचिह्न लगते जा रहे हैं। भारतीय समाज में जैसे–जैसे लोग देहात से उठकर कस्बों में, कस्बों से नगरों में तथा नगरों से महानगरों में बसते चले गए हैं, वैसे–वैसे उनके जीवन बोध में अंतर आता गया। औद्योगिकरण से मनुष्य के जीवन में भारी परिवर्तन हुआ है। वह अपने परिवेश से कटता चला गया। उस पर सामजिक दबाव शिथिल पड़ने लगे, वह दिखावे का चोला पहनता चला गया। अर्थात् रिश्तों में संवेदनहीनता, राजनीति में भ्रष्टाचार ही आधुनिकता की मुख्य देन है, समकालीन कथा लेखिकाओं का अधिकांश कथा–साहित्य इसी जीवन का आधार बनाता है।[4]

(5) मृदुला गर्ग की ''टुकड़ा टुकड़ा आदमी'' कहानी बेलापुर सीमेन्ट कंपनी के मजदूरो की शोचनीय हालत पर प्रकाश डालने वाली आधुनिक कहानी है। बेचारे मजदूरों को रहने के लिए जगह नहीं है। (पेट भर खाना नहीं मिलता, वहाँ इंसान गन्दे नाले में कीड़े की तरह पलता है।) लेकिन चेयरमेन सुबोध कुमार कंपनी के दौरे में जोशीले भाषण से एकदम मजदूरों का शुभाकांक्षी होने का ढोंग रचता है। वापस जाकर पाँच लाख रूपये उनके नाम पर भिजवा देने का वायदा करता है, लेकिन यह सब ढोंग मात्र साबित होता है।[5]

(6) मृदुला गर्ग की ही ''अनाड़ी'' कहानी में भी मजदूरों की समस्या का चित्रण है। बारह वर्षीय सुवर्णा अकेले पाँच घरों का काम निपटाती है, उसके बाप की नौकरी टूट गई है। अकेली माँ से क्या हो सकता है। यूनियन वालों की कारवाइयों के यथार्थ रूप पर मृदुला जी प्रकाश डालती है। कहानी की सुवर्णा कहती है, (सब यूनियन वालों की कारस्तानी है, इतना तो सोचे कि काम है, तो सब कुछ है। उन्हें तो अपना उल्लू सीधा करना है, कहीं हड़ताल करवायेंगे, कहीं कुछ। उन्हें तो लीडरी चलानी हुई, भुगते–भरे गरीब मजदूर। अब हो गई न छटनी'')[6]

(7) मन्नू भंडारी ने ''ऊँचाई'' कहानी में प्रेम उस रूप को उजागर किया है, जो परम्परा या रूढ़ि से पुराना पड़ गया है। शिवानी और शिशिर दोनों पति–पत्नी हैं, शिवानी अपने प्रेमी अतुल के साथ शारीरिक सम्बंध बना लेती है, जिसे वह अपने पति शिशिर के सामने स्पष्ट तथा स्वीकार भी कर लेती है। शिशिर उससे तलाक लेना चाहता है और वह चाहता है कि यदि शिवानी उससे माफी माँग ले और कहती है – मेरे जीवन में तुम्हारा जो स्थान है, उसे कोई नहीं ले सकता। किसी के कितने ही निकट चली जाऊं, चाहे शारीरिक सम्बंध भी स्थापित कर लूँ, पर मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है, वहाँ कोई नहीं आ सकता।[7]

(8) मन्नू भंडारी की ही ''अकेली'' कहानी एक ऐसी औरत की कहानी है, जिसका बच्चा मर जाता है। पति सन्यासी हो जाता है। सोमा बुआ अकेली रहती है। वह रिश्तेदार के यहाँ जाने पर सारा काम अपने आप संभाल लेती है। सोमा बुआ अपने एक रिश्तेदार के यहाँ शादी में जाने की तैयारी में आशा लगाये बैठी है कि वे स्वयं आकर उसे लिवा ले जायेंगे, पर उसे निमंत्रण तक नहीं मिलता।

''अकेली'' कहानी को सोमा के बारे में स्वयं लेखिका लिखती है, इसी तरह ''अकेली'' की सोमा बुआ को बचपन में जाने कब देखा था कि किस प्रकार घर में उपेक्षा पाकर वह अपने आपको दूसरों के लिए महत्वपूर्ण बनाने के भ्रम में हास्यास्पद बनती जा रही थी। उसके अकेलेपन और दयनीयता ने मुझे उस समय केवल मानवीय संवेदना के धरातल पर आकर्षित किया था। उस समय कहानी सोमा बुआ की व्यथा को वाणी देने के लिए लिखी थी। पर बरसों बाद मुझे उसमें कहीं अपना अंश अपनी व्यथा दिखने लगी, तो कहानी अचानक ही मुझे बहुत प्रिय हो उठी।[8]

समकालीन कहानी में मूल्यों के प्रति के यह आधुनिक बोध पूरी तरह रूपायित हो चुका है। प्रेम, विवाह परिवार में माँ–बाप, भाई बहन, पिता–पुत्री, मित्र आदि के भी जितने सहृदय सम्बंध हो सकते हैं, उन सबके प्रति हमारी सोच और चिंतन प्रक्रिया में बड़ा भारी अंतर दिखाई देता है। साथ ही आज कहानी में काम और प्रेम सम्बंधों की खुली से खुली चर्चा भी किसी भी प्रकार के वर्जना भाव को जन्म नहीं देती, वरन् यह आधुनिकता के दौर में कहानी क्षेत्र में स्थापित होने की साहसिकता (बोल्डनेस) प्रदर्शन माना जाने लगा है। महिला कथा लेखिकाओं ने भी इस प्रवृत्ति को बखूबी आगे बढ़ाकर आधुनिक नए नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का काम जारी रखा है।

संदर्भ :

(1) डॉ. नगेन्द्र : आलोचना, जुलाई 1965, आधुनिकता का प्रश्न साहित्य के संदर्भ में, पृष्ठ 5.

(2) अमृतराय : आलोचना, जून–1965, पृष्ठ 23.

(3) मोहन, डॉ. नरेन्द्र : समकालीन साहित्य चिंतन विद्रोह आधुनिकता और सामाजिक परिवर्तन, पृष्ठ 58–59.

(4) मालती, डॉ. के. एम. : साठोत्तर हिन्दी कहानी, पृष्ठ 182.

(5) गर्ग, मृदुला : टुकड़ा–टुकड़ा आदमी, पृष्ठ 17.

(6) गर्ग, मृदुला : अनाड़ी समकालीन भारतीय साहित्य (जुलाई–सितंबर), पृष्ठ 75.

(7) भंडारी, मन्नू : ऊँचाई, ''एक प्लेट सैलाब'', पृष्ठ 19.

(8) भंडारी, मन्नू : मेरी प्रिय कहानियाँ, भूमियाँ, पृष्ठ 6.

सहायक ग्रंथ सूची :

(1) समकालीन महिला कथा साहित्य में मूल्य परकता।

(2) महिला कथाकारों की रचनाओं में आधुनिकता बोध एवं मूल्य।

(3) महिला रचनाधर्मिता में सामाजिकता, आधुनिकता और मूल्य।

(4) समकालीन रचना धर्मिता और समाज मे फैली आधुनिकता का मूल्यों पर प्रभाव।

❁❁

UGC -

APPROVED - JOURNAL

UGC Journal Details

Name of the Journal :	Research Link
ISSN Number :	09731628
e-ISSN Number :	
Source:	UNIV
Subject:	Accounting;Anthropology;Business and International Management;Economics, Econometrics and Finance(all);Education;Environmental Science(all);Finance;Geography, Planning and Development;Law;Political Science a;Social Sciences(all)
Publisher:	Research Link
Country of Publication:	India
Broad Subject Category:	Arts & Humanities;Multidisciplinary;Social Science

Print

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

(1) शोध-पत्र **1500-1700 शब्दों से अधिक नहीं** होना चाहिए।

(2) **हिन्दी एवं मराठी माध्यम के शोधपत्रों को कृतिदेव 10** (Kruti Dev 010) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजें।

(3) **पंजाबी माध्यम के शोधपत्रों को अनमोल लिपि** (AnmolLipi) या **अमृत बोली** (Amritboli) या **जॉय** (Joy) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजें।

(4) अंग्रेजी माध्यम के शोधपत्र टाईम्स न्यू रोमन (Times New Roman), एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' या 'माइक्रोसाफ्ट वर्ड' में भेजे जा सकते हैं।

(4) शोधपत्र की विधि - (1) शीर्षक (2) एबस्ट्रेक्ट (3) की-वर्ड्स (5) प्रस्तावना/प्रवेश (5) उद्देश्य (6) शोध परिकल्पना (7) शोध प्रविधि एवं क्षेत्र (8) सांख्यिकीय तकनीक (9) विवेचन या विश्लेषण (10) सुझाव (11) निष्कर्ष एवं (12) संदर्भ ग्रंथ सूची।

(6) संदर्भ ग्रंथ सूची इस प्रकार दें -

For Books :

(1) Name of Writer, "Name of Book", Publication, Place of Publication, Year of Publication, Page Number/numbers.

For Journals :

(2) Name of Writer, "Title of Article", Name of Journal, Volume ....., Issue ....., Page Numbers.

Web references :

http://utc.iath.virginia.edu/interpret/exhibits/hill/hill.html

(7) **गुजराती माध्यम** के शोधपत्र **हरेकृष्णा (Harekrishna), टेराफोंट वरुण (Terafont Varun), टेराफोंट आकाश (Terafont Aaksah)** में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजे जा सकते हैं।

(8) शोधपत्र की साफ्टकॉपी रिसर्च लिंक के ई-मेल आईडी researchlink@yahoo.co.in पर भेजने के बाद हॉर्डकॉपी, शोधपत्र के मौलिक होने के घोषणा पत्र के साथ हस्ताक्षर कर 'रिसर्च लिंक' के कार्यालय को प्रेषित करें।

❁❁